गजानन माधव मुक्तिबोध : सृजन और संदर्भ

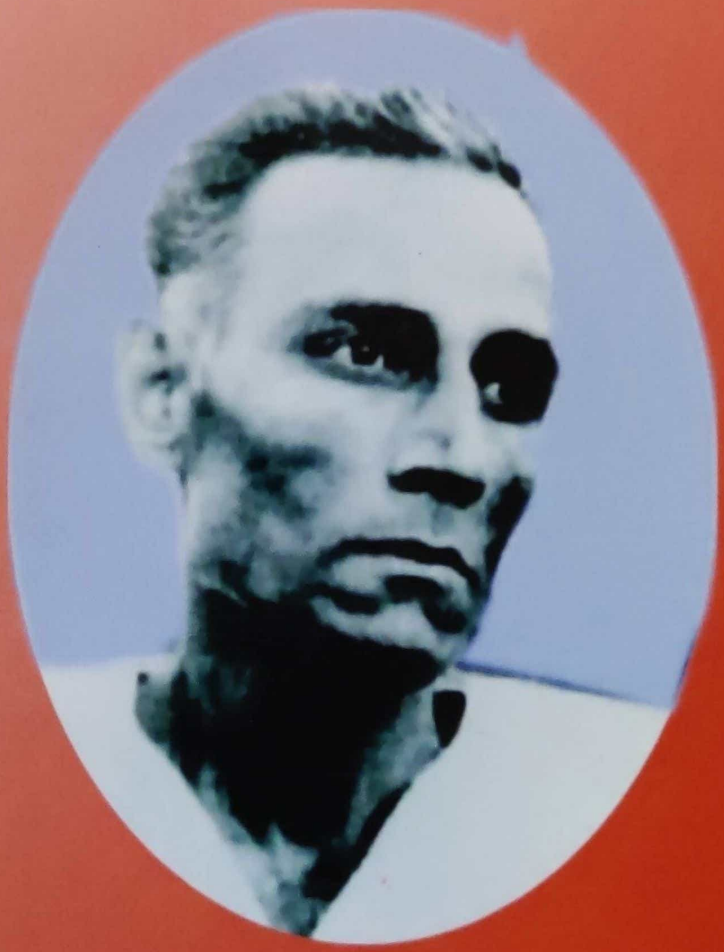

सम्पादक
डॉ. सतीश यादव

सह-सम्पादक
डॉ. अर्जुन कसबे

ISBN No. 978-93-83672-47-9

गजानन माधव मुक्तिबोध : सृजन और संदर्भ (सम्पादन)

सम्पादक : डॉ. सतीश यादव

सह-सम्पादक : डॉ. अर्जुन कसबे

© : डॉ. आर.एस.अवस्थी

प्राचार्य, शिवाजी महाविद्यालय,

रेणापुर, जि. लातुर

प्रकाशक : शौर्य पब्लिकेशन, कपील नगर, लातुर

मो.नं. ८१४९६६८९९९

अक्षर - टंकण : डॉ. संतोष कुलकर्णी

मुद्रक : आर.आर. ग्राफिक्स,

एम.आय.डी.सी, लातुर

प्रथम संस्करण : फरवरी २०१७

स्वागत मूल्य : २००/- (दो सौ रुपये मात्र)

नोट : प्रकाशित रचनाओं के विचार से सम्पादक मंड़ल का सहमत होना आवश्यक नहीं।

३	'विपात्र' : बेचैनी का समाजशास्त्र रचती मूल्यवान कृति	डॉ. सतीश यादव	२६५
४	'विपात्र' उपन्यास में मध्यमवर्गीय अंतर्द्वंद्व	डॉ. व्यंकट पाटील	२७२
५	'विपात्र' : दरमियानी का दर्द	डॉ. गणपत राठोड	२७६
६	'विपात्र' उपन्यास का मूल्यांकन	डॉ. सय्यद अमर फकिर	२७९
७	'काठ का सपना' में मध्यवर्गीय यथार्थ	डॉ. एन.जी. एमेकर	२८२
८	मुक्तिबोध की कहानियों में आत्मशोध और फैंटेसी	प्रा. प्रकाश बन्सीधर खुळे	२८५
९	मुक्तिबोध की कहानियों में सामाजिक यथार्थ	डॉ. रमेश संभाजी कुरे	२९१
१०	बालमनोवैज्ञानिक कहानीकार- मुक्तिबोध	डॉ. मा. ना. गायकवाड	२९६
११	मुक्तिबोध की कहानियों में समाज जीवन के विविध रूप	डॉ. संतोष सुभाषराव कुलकर्णी	२९९
१२	अपराध बोध और पश्चाताप की कहानी 'कलाड ईथरली'	प्रा. अमोल इंगळे	३०३
१३	'सतह से उठता आदमी' : एक अनुशीलन	श्रीदेवी बाबुराव बिरादार	३०६
१४	प्रतिबद्ध पत्रकार गजानन माधव मुक्तिबोध	डॉ. संजय जाधव	३१०
१५	मुक्तिबोध की डायरी में व्यक्त समीक्षा-विचार	प्रा. नयन औंदुबर भादुले-राजमाने	३१७
१६	मुक्तिबोध की कहानियों में अन्त: स्वर	डॉ. के. बी. गिते	३२१
१७	'एक साहित्यिक की डायरी ': अनुभूत जीवन-सत्य की जीवट जिंदादिली का जीवंत दस्तावेज	प्रा. सूर्यकांत रामचंद्र चव्हाण	३२५
१८	गजानन माधव मुक्तिबोध : कहानियों की लेखन शैली	प्रा. राम दगडू खलंग्रे	३३१

परिशिष्ट

१	लेखक संपर्क :		३३७
२	संयोजन समिति :		३४२
*	मुक्तिबोध की कविता में मार्क्सवादी दर्शन	प्रा.डॉ. संतोष विजय येरावार	३४३
*	मुक्तिबोध- 'अंधेरे में' के संदर्भ में	प्रा. खुपसे मंगल संभाजीराव	३४७
*	'आधुनिक मानव नियति का गहरा यथार्थबोध कराते मुक्तिबोध'	प्रा. डॉ. शेख मुखत्यार	३४९

मुक्तिबोध की कविता में मार्क्सवादी दर्शन

प्रा.डॉ. संतोष विजय येरावार

मुक्तिबोध एक क्रांन्तिकारी कवि थे | प्रस्थापित व्यवस्था के विरोध में उन्होंने अपनी आवाज बुलंद की है | इन्होंने व्यक्तिगत जीवन से लेकर साहित्यिक जीवन तक परस्पराओं रुढियों एवं अपने आदर्शों के साथ कभी भी समझौता नहीं किया | मुक्तिबोध का समस्त काव्य सामाजिकता, मानवता, और समानता का आग्रही हैं | मार्क्सवादी चेतना उनके काव्य का प्राणतत्व हैं | पूँजीवाद का विरोध, में यथार्थ बोध, लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना, मानव प्रतिष्ठा, सर्वहारा वर्ग का चित्रण, क्रांन्ति एवं विद्रोह, व्यवस्था के विरोध में घोर आक्रोश एवं संघर्ष उनके काव्य की महत्वपूर्ण विशेषतायें हैं | मुक्तिबोध कवि का यह उदय कर्तव्य मानते है कि अन्याय के खिलाफ, आम आदमी की छटपटाहट, पीडा, दु:ख, वेदना और त्रासदी कों उघाडने का ईमानदारी से प्रयत्न करें |

मुक्तिबोध के काव्यपर मार्क्सवाद का प्रभाव सर्वाधिक हैं | वे कहते है, "क्रमश : मेरा झुकाव मार्क्सवाद की ओर हुआ | अधिक वैज्ञानिक, अधिक मर्त और अधिक तेजस्वी दृष्टिकोण मुझे प्राप्त हुआ "| मार्क्सवादी दर्शन में समानता आधारभूत तत्व है | जहाँ उँच-नीच, भेद-भाव, कनिष्ठ-वरिष्ठ, गरीब-अमीर, सुवर्ण-दलित, पूँजीपति-मजदूर, बेकारी-भुखमारी, शोषण के विरोध में आवाज हो | सामाजिक, आर्थिक, राजीनीतिक दृष्टि से सब को समान अधिकार, सुविधाए, और संभावनाएँ हो | समाज के सभी अंगो का समान मात्रा में विकास हो | समाज के केवल कुछ सिमित अंगो का विकास यह विकास न होकर विकृति होती है | मार्क्सवाद एक ऐसे समाज की स्थापना करना चाहता हैं | जहाँ पर अमन, शांति, एवं समानता हो |

"मुक्तिबोध के काव्य चिव्तन में ही नहीं जीवन चिंतन में भी सबसे अधिक महत्त्व मार्क्सवादी दर्शन को प्राप्त है | मार्क्सवाद के प्रति कवि की आस्था आकस्मिक या भावुकतावश न होकर, उसके चिन्तन और गम्भीर अध्ययन और सबसे अधिक उसकी अपनी अनुभूत वास्तविकताओं के आधार पर विकसित हुई है | मुक्तिबोध का झुकाव मार्क्सवाद की ओर ही अधिक था मार्क्सवाद के कारण ही वैज्ञानिक एवं तेजस्वी चिंतन प्राप्त हुआ है ऐसा उनका मानना था | मार्क्सवादी दर्शन मानव को शोषण मुक्त करने में सहायक है | वे काव्य के माध्यम से शोषणमुक्त एवं सुन्दर समाज की कामना करते है | "सभी प्रश्नोत्तरी की तुंग प्रतिमाये / गिराकर तोड देता हूँ हथौडे से /कि वे सब प्रश्न कृत्रिम और /उत्तर और भी छलमय / समस्या एक मेरे सभ्य नगरों और ग्रामों से /सभी मानव सुखी ,सुन्दर व शौषण मुक्त /कब होंगे ?"[2]

मुक्तिबोध ने सुन्दर एवं शोषण मुक्त समाज की कल्पना कविता के माध्यम से की है | मार्क्सवाद तो शोषित वर्ग का पक्षधर है और यही पक्षधरता मुक्तिबोध में हैं | समाज व्यवथा में समानता यह उस समाज की परिपक्वता को दर्शाता हैं | असमानता ही समाज के विविध समस्याओं के मूल में हैं | सभी शोषित वर्ग जबतक शोषण मुक्त नहीं होगा तबतक सब बेतुका एवं बेमानी हैं |

जबतक समाज का आखरी तबका और एक भी व्यक्ति अन्याय एवं शोषण के चक्रव्युह में फसा हुआ हैं | अर्थात तब तक शोषण का चक्र किसी भी समाज में चल रहा हैं | तब तक किसी एक की भी मुक्ति की कल्पना निरर्थक हैं |

" दष्यु पराक्रम/शोषण पाप का परम्परा क्रम/ वक्षासीन है / जिसके कि होने में गहन अंशदान स्वयं तुम्हारा/ इसीलिये, जब तक उसकी स्थिति है/ मुक्ति न तुमको |/ याद रखो/ कभी अकेले के मुक्ति न मिलती/ यदि वह है तो सबके ही साथ है |"[3] मु क्ति की कल्पना अगर संम्भव बनती है तो व्यक्ति मानव के लिए नहीं, समूह - मानव के लिए मुक्ति का प्रयास करना होगा | समाज - की मुक्ति ही मानव की वयैक्तिक मुक्ति है | और जब तक संपूर्ण समाज शोषण - मुक्त नहीं होगा तबतक मुक्ति संभव नहीं है | लेनिन के अनुसार , "साहित्य समस्य शोषित वर्ग की सामूहिक मुक्ति के लिये किये जानेवाला प्रयास हैं|"

मार्क्सवाद का बुनियादी नियम हैं | सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक दृष्टि से सभी को समान अधिकार मिलें | सभी के साथ समान व्यवहार किया जाए | वर्ग एवं लिंग के आधार पर कोई भेद ना हो | मुक्तिबोध की अधिक से अधिक कवितायें मार्क्सवाद से आलोकित हैं |

"यह मुस्कानों का बल होगा / यह फूलों का परिमल होगा/ अन्तर्देश करुणा तट पर/ होगा नये राज्य का स्थापन/ सब असंख्य होंगी आशायें/ मुक्त निलिमा में खगदल बन/ उडती होगी गहन दूर"[4]

स्थापित कुलूषित एवं अन्याय अत्याचार को बढावा देनीवाली परंपरा का विरोध करना एवं सर्व समावेशक परंपरा की स्थापना करने का प्रयास मुक्तिबोध ने किया है | मुक्तिबोध ने वयैक्तिक जीवन और साहित्यिक जीवन दोनों में परंपरा को तोडा है | परंपरा को अविस्कार करने से उसे तोडने से ही समाज नई ऊँचाइओं को अपनाता है और प्रगति करता है | परम्परा की काली घट को चीरते - फाडते प्रगति की प्रखर प्रकाशमयी चमकती उदित होती है | परम्परा खेतों की पगडण्डी के समान है जिस पर लोंगों का आवक - जावक होता है | अर्थात विषय रुपी खेत में परम्परा रुपी पगडण्डी होती है जिसके द्वारा मानव जाति जीवन व्यतीत करती है | मुक्तिबोध प्रगति के लिए परम्परा को अनिवार्य मानते हैं | यहां परम्परा से उनका अभिप्राय विगतक रुढियों पर आधारित परम्परा नहीं, वरन् वर्तमान की वास्तविकताओं पर आधारित नयी परम्परा से है | आज की विश्रृंखलता और अमानवीयता का कारण मुक्तिबोध नयी परम्परा का अभाव मानते हैं | इस परम्परा की जरुरत उनके लिए नही है, जो वर्तमान सभ्यता के जंगल में नग्र रीछ की तरह विचर रहे हैं | इसकी सर्वाधिक आवश्यकता उन सामान्य के लिए है | जो नित्यशः उत्पादन के शिकार बने हैं |[5]

"वे लोग , बहुत जो उपर - उपर चढते हैं/ हम नीचे - नीचे गिरते हैं / तब हम पाते वी थी सुसंगमय उष्मामय/ हम हैं समाज की तलछट, केवल इसीलिए/ हमको सर्वोज्वल परम्परा चाहिए |"[6]

काव्य - दर्शन के क्षेत्र में भी उन्होंने प्रयोगवाद के साहित्यिक लक्ष्यों को पहचान कर जनसंघर्ष एवं क्रान्ति के रास्ते को अपनाया | परम्पराओं के इस विरोध के परिणामस्वरुप ही वे काफी समय तक घोर उपेक्षा के शिकार रहे | नामवर सिंह ने सत्य ही लिखा है - "नयी कविता में मुक्तिबोध की स्थिति वही है जो छायावाद में निराला की हैं | निराला के समान ही मुक्तिबोध नें भी अपने युग के सामान्य काव्य मूल्यों को प्रतिफलित करने के साथ ही उनकी सीमा को चुनौती देकर उस सर्जनात्मक विशिष्टता को चरितार्थ किया जिससे समकालीन काव्य का सही मूल्यांकन संभव हो सका |"[7] अपनी परम्परा - विरोधी और प्रगतिशील चेतना के कारण ही वे गाँधी - युग में भी क्रान्ति के स्वप्न ही नहीं देख रहे थे | क्रान्ति के मार्ग पर शहीद होने की सार्थकता को समझ रहे थे |

पुरानी परम्पराओं के ढह जाने को वे सहजता से स्वीकार कर लेते हैं और परंपरा के ढहने से ही नयी व्यवस्था पनपती है | "पुराना मकान था, ढहना था ढह गया/ बुरा क्या हुआ ?/ बडे - बडे दृढाकार

के
दवाते पक्ष में, अथवा/ कहीं उससे लुटी - टुटी/ अंधेरी निम्न कक्षा में तुम्हारा मन/ कहाँ हो तुम"[12]

सामान्य जन के साथ गहरा जुडाव उनके काव्य की प्रमुख विशिष्टता है | उनके काव्य में आम आदमी की संवेदना धडकती हैं | उनकी कविता में आम आदमी की व्यथा, पीडा एवं सत्य उदघाटित होता है | शोषित वर्ग की हर एक पीडा उनके काव्य का कथ्य है | हर वर्ग के शोषण का डारावना रुप उनकी कविता में उदघाटित होता हैं | मनुष्य की पीडा, त्रासदी, संत्रास एवं अभाव को निर्भिकता से बेबाक ढंग से उदघाटित किया है | वे इस युग के सामाजिक संघर्ष को आत्म विश्लेषण के माध्यम से समझकर अपनी अन्तर्वेदना को संगत एवं पूर्ण निष्कर्षो तक लेकर जाने वाले कवि हैं | डॉ.रामस्वरुप चर्तुर्वेदी के अनुसार मुक्तिबोध ने सामान्य निम्न मध्यमवर्गीय जीवन को एक नया सम्मान और आत्मविश्वास का भाव दिया और भारतीय समाज के एक बहुत बडे और क्षमताओं के साथ उसी वर्ग की भाषा में रचा है | भाषा को पढते ही उस जीवन से सीधा साक्षात्कार होने लगता है | इसी को मुक्तिबोध ने काव्य में जीवन की पुर्नरचना कहा है | भारतीय समाज व्यवस्था की अनेको विसंगतियों विकृतियों एवं विडबनाओं वाणी प्रदान करने का कार्य मुक्तिबोध ने किया है | संघर्षरत मानव की पीडा मुक्तिबोध के काव्य का प्राण तत्व है | उनका काव्य शोषित , वंचित, उपेक्षित, अभावग्रस्त, दिन, हिन, जन मानस की व्यथा की कथा है |

संदर्भ सुची :

1) मुक्तिबोध पुर्न मुल्यांकन, डॉ. संपत ठाकूर - पृष्ठ 105
2) मुक्तिबोध रचनावली भाग -2 , चकमक की चिनगारिया - पृष्ठ 233
3) मुक्तिबोध रचनावली भाग-2, चम्बल की घाटी में, पृष्ठ -419
4) मुक्तिबोध रचनावली भाग-1,नेमिचंन्द्र जैन - पृष्ठ -82
5) डॉ. ललिता राठोड, अज्ञेय एवं मुक्तिबोध - पृष्ठ - 111
6) डॉ. ललिता राठोड, अज्ञेय एवं मुक्तिबोध - पृष्ठ - 111
7) नामवर सिंह, कविता के नये प्रतिमान प्रथम संस्करण की भूमिका
8) मुक्तिबोध रचनावली 2, एक भूतपूर्व विद्रोही का आत्मकथन , पृष्ठ - 134
9) वहि पृ. 137
10) डॉ. प्रभा दीक्षित, मुक्तिबोध एवं नार्गाजुन का काव्य-दर्शन,पृष्ठ - 138
11) मुक्तिबोध रचनावली भाग 2, चॉद का मुँह टेढा है, पृष्ठ - 274
12) मुक्तिबोध रचनावली भाग 2, चकमक की चिनगारियाँ , पृष्ठ-232